



## संपादक की कलम से.....

गीता शर्मा

ज्ञान, विचार और शोध की परंपरा भारतीय साहित्य और संस्कृति की मूल आत्मा रही है। इसी परंपरा को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से “शोधाचल” पत्रिका का यह प्रथम अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्ष और संतोष की अनुभूति हो रही है। किसी भी नई पत्रिका का आरंभ केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि एक वैचारिक यात्रा का प्रारंभ होता है। शोधाचल भी उसी यात्रा का पहला कदम है, जो शोध, चिंतन और सृजन की नई दिशाओं को उद्घाटित करने का प्रयास करेगी।

वर्तमान समय में ज्ञान-विज्ञान और साहित्य के क्षेत्र में निरंतर नए शोध और विचार सामने आ रहे हैं। किंतु इन विचारों को समुचित मंच प्रदान करना भी उतना ही आवश्यक है, जहाँ शोधार्थी, विद्वान और युवा चिंतक अपने अध्ययन और अनुभव को साझा कर सकें। शोधाचल इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आरंभ की गई एक विनम्र पहल है। हमारा प्रयास रहेगा कि यह पत्रिका शोधपरक लेखों, आलोचनात्मक दृष्टिकोण और साहित्यिक विमर्श के माध्यम से ज्ञान-विस्तार का एक सशक्त मंच बने।

इस प्रथम अंक में विभिन्न विषयों से जुड़े विद्वानों के लेख, शोध-आलेख और चिंतनपरक सामग्री को सम्मिलित किया गया है। इन लेखों के माध्यम से न केवल नए विचार सामने आते हैं, बल्कि पारंपरिक धारणाओं पर पुनर्विचार की संभावनाएँ भी निर्मित होती हैं। हमें विश्वास है कि यह अंक पाठकों को नई दृष्टि प्रदान करेगा और शोध के प्रति उनकी रुचि को

भी प्रोत्साहित करेगा।

आज के समय में शोध केवल विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों तक सीमित नहीं रह सकता। समाज, संस्कृति, भाषा और साहित्य से जुड़े प्रत्येक प्रश्न पर गंभीर चिंतन आवश्यक है। यदि शोध समाज से जुड़ा है तो वह अधिक सार्थक और प्रभावी बनता है। शोधाचल इसी विचार को केंद्र में रखकर समाज और अकादमिक जगत के बीच एक सेतु बनने का प्रयास करेगा।

हम सभी विद्वानों, शोधार्थियों और पाठकों से अपेक्षा करते हैं कि वे अपने मूल्यवान सुझाव, लेख और शोध-आलेख के माध्यम से इस पत्रिका को समृद्ध करेंगे। आपकी सहभागिता और सहयोग ही इस प्रयास को सफल बना सकता है।

अंत में, हम सभी सहयोगियों, लेखकों और पाठकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सहयोग से शोधाचल का यह प्रथम अंक संभव हो सका। हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका शोध और चिंतन की दुनिया में अपनी एक विशिष्ट पहचान स्थापित करेगी।